कोन्स्तन्तीन स्तन्युकोविच

मक्सीम्का

'मक्सीम्का' कहानी (१८९६) की घटनाएं रूस के असीम मैदानों या पहाड़ों में नहीं, बल्कि उष्णकटिबंधीय महासागर के नीले विस्तार में सैनिक जलपोत पर घटती हैं। कहानी कोन्स्तन्तीन मिखाइलोविच स्तन्युकोविच (१८४३—१९०३) ने लिखी है, जो मल्लाहों के जीवन के बारे में कहानियों के लिए प्रसिद्ध हैं। उनकी 'समुद्री कहानियों' और ''चील' पोत पर संसार की यात्रा' पुस्तक को बाल-साहित्य में स्थान प्राप्त है।

ग्यारह वर्ष की आयु में कोन्स्तन्तीन को उनके एडमिरल पिता ने पीटर्सबर्ग के नेवी कैडट कोर में भरती कराया। सत्रह वर्ष की आयु में भावी लेखक 'कलेवाला' युद्ध पोत पर संसार की परिक्रमा पर निकला, जो तीन साल में पूरी हुई। बाईस वर्ष की आयु में नौसेना की सेवा छोड़कर स्तन्युकोविच ने पहले एक ग्रामीण विद्यालय में शिक्षक का काम किया और फिर पत्रकारिता के क्षेत्र में उतरे। क्रांतिकारियों के साथ सम्पर्क के आरोप में उन्हें साइबेरिया निर्वासित किया गया। यहां साइबेरिया में उन्होंने समुद्री जीवन पर कहानियां लिखनी शुरू कीं, जिनसे उन्हें ख्याति मिली।

स्तन्युकोविच की पुस्तकों पर उनके बचपन की यादों की अमिट छाप है। बचपन में वह सेवास्तोपल क़िले में रहते थे, जहां उनके पिता फ़ौजी गवर्नर थे। उन्हें यहां रूसी सैनिकों और मल्लाहों की वीरता, साहस और उच्च मानवीयता के अनेक उदाहरण देखने को मिले। साथ ही वह यह भी देखते थे कि उन्हें कोई अधिकार प्राप्त नहीं हैं, वे अपने कमांडरों और अफ़सरों की मनमर्ज़ी पर पूरी तरह निर्भर हैं और उन्हें उनसे कितने अपमान सहने पड़ते हैं। अपनी कहानियों में स्तन्युकोविच ने भूदासता के प्रति अपना आक्रोशपूर्ण विरोध व्यक्त किया है। अपनी किशोरावस्था में उन्होंने आम लोगों की यह ग़ुलामी देखी थी। उनकी कहानियों का उज्ज्वल पक्ष है रूसी मल्लाहों की मानवीयता और उदारहृदयता, उनकी भाईचारे की भावना, बच्चों के प्रति उनका प्रेम तथा कोई भी भाषा बोलनेवाले, चमड़ी के किसी भी रंग के लोगों की सहायता करने की उनकी तत्परता।

(१)

अभी-अभी घंटा बजा था। अटलांटिक महासागर के उष्णकटिबंध में सुहावनी सुबह के छह बजे थे।

क्षितिज से असीम ऊंचाइयों को उठते आकाश का रंग कोमल, पारदर्शी सा फ़िरोज़ी था। कहीं-कहीं ही हिमश्वेत लेस जैसे छोटे-छोटे तीतर पंखी बादल छाए हुए थे। स्वर्णिम सूर्य तेज़ी से चढ़ रहा था। महासागर की लहरदार जलराशि पर वह हर्षमय आलोक बरसा रहा था। क्षितिज की नीली रेखा महासागर की अनंत दूरी को सीमाबद्ध कर रही थी।

चारों ओर एक भव्य निस्तब्धता छाई हुई थी।

बस सशक्त उजली-नीली लहरें धूप में अपने रुपहले शृंग चमचमाती और एक दूसरी से टकराती मधुर गुंजन करती प्रतीत होती थीं। और यह गुंजन मानो कहता था कि इन अक्षांतरों में यह चिरकालीन महासागर सदा उदार होता है। स्नेही पिता के समान वह अपने विशाल वक्ष पर जलपोतों
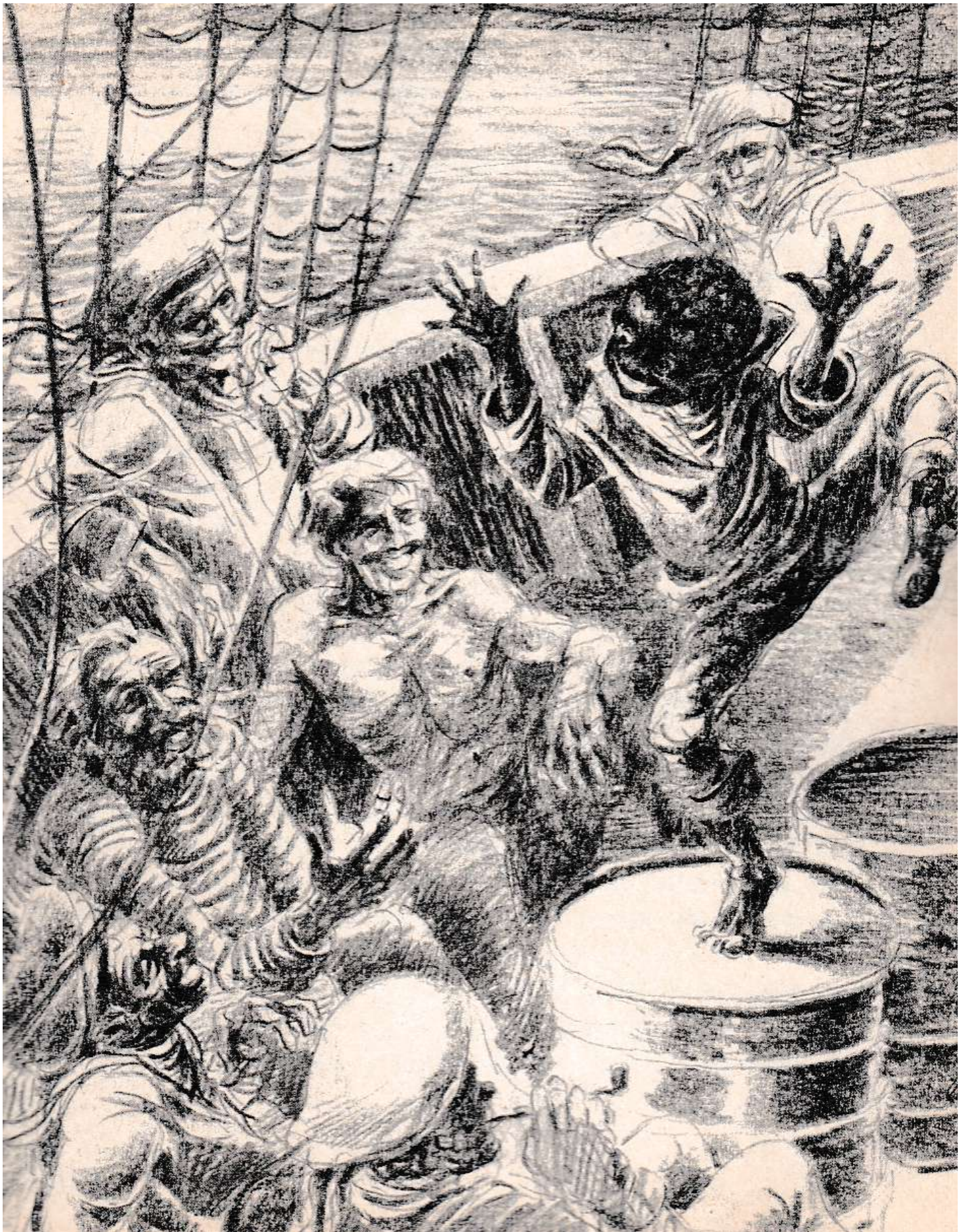
को संभाले हुए बहाता है और उन्हें तूफ़ानों का कोई डर नहीं होता।

चारों ओर शून्यता का राज था।

न कहीं कोई सफ़ेद पाल झिलमिला रहा था, न ही कहीं क्षितिज से उठता धुआं दिख रहा था। महासागर का मार्ग यहां एकदम खुला था।

विरले ही कभी कोई उड़ती मछली धूप में चमचमा उठती, जलक्रीड़ा करती व्हेल की काली पीठ दिखती और वह ज़ोर से पानी का फ़व्वारा छोड़ती, आकाश में काला सा फ़्रिगेट या हिमधवल एल्बाट्रोस उड़ते जाते, जल के पास ही छोटा सा, सुरमई समुद्रकाक उड़ता दिखता। वे अफ़्रीका या अमरीका के सुदूर तटों को जा रहे होते। और फिर से चारों ओर शून्य विस्तार होता। फिर वही गरजता महासागर और सूर्य एवं आकाश – उजले, स्नेहिल, मृदुल।

महासागर की तरंगों पर डोलता हुआ वाष्पचालित रूसी क्लिपर युद्धपोत 'लड़ाकू' तेज़ी से दक्षिण की ओर बढ़ रहा था और उत्तर से निरंतर दूर ही दूर होता जा रहा था, उस उत्तर से जहां धुंध थी, ठंड थी, पर फिर भी वह इतना प्रिय था।

'लड़ाकू' पोत बहुत बड़ा तो न था, वह बिल्कुल काला था और उसकी बनावट सुघड़, सुंदर थी। थोड़ा पीछे को झुके, ऊंचे मस्तूलों पर ऊपर से नीचे तक पाल लगे हुए थे, निरंतर एक ही दिशा में प्रायः एक ही गति से बह रही उत्तर-पूर्वी हवा पालों को फुला रही थी और वह घंटे में सात-आठ समुद्री मील पार करता बढ़ता चला जा रहा था, हवा की ओर वाला बगल थोड़ा झुका हुआ था। 'लड़ाकू' सहज ही एक लहर से दूसरी पर चढ़ता हुआ हल्के शोर के साथ अपने पनकट से उनको काटता जा रहा था। पनकट के पास पानी में झाग उठ रही थी और बूंदें हीरों सी चमक रही थीं। लहरें उसके बगलों को चूम रही थीं। दबूसे के पीछे चौड़ी रुपहली पट्टी छूट रही थी।

डेक पर और नीचे झंडा फहराने से पहले यानी आठ बजे से पहले की आम सफ़ाई हो रही थी। आठ बजे ही युद्धपोत पर दिन शुरू होता था।

चौड़े नीले कालरों वाली सफ़ेद कमीज़ें पहने मल्लाह डेक को, जहाज़ के पहलुओं, तोपों और तांबे को घिस-घिसकर, रगड़-रगड़कर साफ़ कर रहे थे। उनकी धूप से संवलाई गरदनें दिख रही थीं, पतलूनें घुटनों तक चढ़ी हुई

थीं और वे नंगे पैर थे। वे उसी तरह बड़ी लगन और ध्यान से अपने जहाज़ को चमका रहे थे, जैसा कि सदा युद्धपोतों पर होता है, जहां मस्तूलों के शिखरों से लेकर खाव तक ग़ज़ब की सफ़ाई होनी चाहिए और जहां हर हिस्सा जिसे ईंट या चीथड़े से घिसा-रगड़ा जा सकता है, चमचमाना चाहिए।

मल्लाह बड़ी लगन और जतन से काम कर रहे थे। मल्लाहों का मेट, पुराना नाविक, मत्वेइच जिसका चेहरा धूप से और तट पर चलनेवाले शराब के दौरों से लाल-सुर्ख़ था, सफ़ाई के दौरान बीच-बीच में ऐसी करारी और लंबी-चौड़ी गाली देता कि इनके आदी रूसी नाविक भी दंग रह जाते। मत्वेइच किसी को डांटने-डपटने के लिए नहीं, बल्कि जैसा कि वह खुद कहता था "क़ायदे के लिए" ही ऐसा करता था।

लेकिन कोई उसकी इन गालियों का बुरा नहीं मानता था। सब जानते थे कि वह भला आदमी है, खामखाह किसी को तंग नहीं करता, अपनी सत्ता का दुरुपयोग नहीं करता। सब इस बात के आदी हो चुके थे कि वह दो शब्द भी गाली के बिना नहीं कह सकता था। और आश्चर्य एवं प्रशंसा के साथ यह देखते थे कि वह एक ही गाली कितनी तरह से घुमा-फिराकर देता है। इस मामले में उसका कोई सानी न था।

कभी-कभी मल्लाह डेक के अग्रभाग में जाते, जहां पानी का ड्रम रखा था और एक डिब्बे में सुलगती रस्सी, ताकि जल्दी-जल्दी तेज़ तंबाकू का पाइप पी लें, दो बातें कर लें। और फिर से सफ़ाई में जुट जाते, तोपें चमकाने लगते, जहाज़ के बगल धोते। सुबह-तड़के सें ही बड़ा अफ़सर जहाज़ पर इधर-उधर चक्कर लगा रहा था, भांक रहा था। ऊंचे क़द के, दुबले से अफ़सर को पास आता देखकर मल्लाह और भी जतन से अपना काम करते।

सुबह चार बजे से सुनहरी बालों वाला जवान अफ़सर ड्यूटी पर था। पहरे के पहले आधे घंटे का आलस वह कब का दूर कर चुका था। वह एकदम सफ़ेद कपड़े पहने था, कमीज़ के बटन खुले हुए थे। जहाज़ के चबूतरे पर चक्कर लगाता हुआ वह ताज़ी हवा में गहरी सांसें ले रहा था। हवा अभी धूप से तपी न थी। कभी-कभी रुक जाता और कुतुबनुमा देखता कि कर्णधार पतवार ठीक चला रहे हैं या नहीं, या पालों पर दृष्टि डालता कि वे ठीक फूले हुए हैं या नहीं,

या क्षितिज की ओर नज़र दौड़ाता – कहीं तूफ़ानी बादल तो नहीं दिख रहा। ऐसे क्षणों में गुद्दी का कोमल स्पर्श करती हवा जवान लेफ़्टिनेंट को बहुत भाती ... सब ठीक-ठाक था, और लेफ़्टिनेंट के लिए ड्यूटी पर करने को कुछ नहीं था।

और वह फिर से चबूतरा नापने लगता और बहुत जल्दी ही उस क्षण का सपना देखने लगता, जब ड्यूटी ख़त्म होगी और वह जाकर ताज़े, नरम-नरम बंदों के साथ एक-दो गिलास चाय पिएगा। अफ़सरों का बावर्ची बंद बड़े अच्छे बनाता था, हां, अगर मैदे में खमीर लाने के लिए जो वोद्का वह डालता था, उसे अपने हलक में नहीं उतार लेता था, तब।

(२)

अचानक डेक पर प्रहरी की, जो गलही पर बैठा आगे देख रहा था, बहुत ही ज़ोर की और व्यथित चीख गूंजी।

"समुद्र में आदमी है!"

मल्लाहों ने तुरंत अपना काम छोड़ दिया, आश्चर्यचकित और उद्विग्न से वे दौड़े-दौड़े डेक के अग्रभाग पर गए और समुद्र पर नज़रें लगा दीं।

"कहां है? कहां है?" चारों ओर से प्रहरी से पूछा जा रहा था। वह हल्के, पयाल के रंग के बालों वाला जवान मल्लाह था, उसका चेहरा कागज़ सा सफ़ेद पड़ गया था।

"वहां," कांपते हाथ से उसने इशारा किया। "अब दिखाई नहीं दे रहा। अभी-अभी मैंने देखा था ... मस्तूल पर था ... शायद बंधा हुआ है," उत्तेजित स्वर में मल्लाह कह रहा था और नज़रों से उस आदमी को ढूंढ़ने की कोशिश कर रहा था, जिसे उसने अभी-अभी देखा था।

ड्यूटी पर खड़ा लेफ़्टिनेंट प्रहरी की चीख से ठिठक गया, और बाइनोकुलर में आंखें गाड़कर उसे जहाज़ के आगे के विस्तार में घुमाने लगा।

सिग्नलमैन भी दूरबीन में उधर ही देख रहा था।

"दिखा?" लेफ़्टिनेंट ने पूछा।

"जी, सा'ब ... थोड़ा बाएं घुमाइए ..."

पर उसी क्षण अफ़सर ने भी लहरों के बीच मस्तूल का टुकड़ा और उस पर मानव आकृति देख ली।

और कांपती आवाज़ में जल्दी-जल्दी, अपने स्वस्थ फेफड़ों का पूरा ज़ोर लगाकर वह चीखा:

"ऊपर आने की सीटी दो! अगला और बड़ा पाल उतारो! नाव तैयार करो!"

सिग्नलमैन की ओर मुड़कर उत्तेजित स्वर में कहा:

"खोना नहीं उसे अपनी नज़रों से!"

"सब ऊपर चल!" सीटी बजाने के बाद मल्लाहों का मेट अपनी फटी सी, भारी आवाज़ में चिल्लाया।

मल्लाह बावलों से अपनी-अपनी जगह दौड़े।

कप्तान और बड़ा अफ़सर दौड़ते हुए चबूतरे पर चढ़ रहे थे। उनींदे अफ़सर चलते-चलते ही वर्दी के कोट पहनते हुए सीढ़ियां चढ़कर डेक पर आ रहे थे।

जैसा कि सबको ऊपर आने के हुक्म पर सदा होता है, बड़े अफ़सर ने कमान संभाली। उसके मुंह से ज़ोर-ज़ोर से आदेश निकलते और मल्लाह तत्क्षण उन्हें पूरा करने में जुट जाते। उनके हाथ मशीनों की तरह चल रहे थे। हर कोई मानो यह समझता था कि एक-एक पल कितना कीमती है।

सात मिनट भी न बीते थे कि दो-तीन पाल छोड़कर बाक़ी सब उतार दिए गए, जहाज़ खड़ा हो गया, थिर सा समुद्र में डोलने लगा, और सोलह खेवैयों के साथ नाव भी पानी में उतार दी गई। उसकी पतवार एक अफ़सर ने संभाल रखी थी।

"जाओ, भगवान तुम्हारा साथ दे!" जहाज़ से अलग हुई नाव की ओर चिल्लाकर कप्तान ने कहा।

आदमी को बचाने की जल्दी में खेवैये पूरा ज़ोर लगाकर नाव खेने लगे।

पर इन सात मिनटों में, जो जहाज़ को रोकने में लगे वह कोई मील भर दूर निकल गया था और मस्तूल का टुकड़ा बाइनोकुलर में भी नहीं दिख रहा था।

पर कुतुबनुमे से वह दिशा देख ली गई थी, जिधर आदमी था और नाव उस ओर बढ़ती जा रही थी।

'लड़ाकू' पोत के सभी मल्लाहों की नज़रें नाव पर लगी हुई थीं। महासागर की लहरों पर चढ़ती-उतरती नाव एक तुच्छ सा टुकड़ा लगती थी।

शीघ्र ही वह भी एक छोटा सा काला धब्बा लगने लगी।

(३)

डेक पर ख़ामोशी छाई हुई थी।

क्वार्टर डेक पर भीड़ लगाए खड़े मल्लाह बस कभी-कभार दबी-दबी आवाज़ में कुछ कह देते थे।

"किसी डूब गए जहाज़ का मल्लाह होगा।"

"यहां पर जहाज़ डूबना तो मुश्किल है। हां, अगर बिल्कुल ही बेकार जहाज़ रहा हो..."

"नहीं, रात को किसी दूसरे जहाज़ से टकरा गया होगा।"

"या शायद जल गया हो।"

"एक ही आदमी बचा है बस!"

"शायद दूसरे नावों पर हों, इसे भूल गए हों..."

"पता नहीं ज़िंदा है कि नहीं।"

"पानी तो गरम है। शायद ज़िंदा ही हो।"

"कैसे इसे शार्क मछली नहीं खा गई। यहां तो कितनी हैं ये शार्कें!"

"हां भाइयो! यह जहाज़ की नौकरी बड़ी ख़तरनाक है। ओफ़, कितनी ख़तरनाक!" उसांस भरते हुए बिल्कुल जवान से मल्लाह ने कहा। वह नौसेना में पहले साल ही था और सीधा विश्व परिक्रमा कर रहे जहाज़ पर लग गया था।

उसके चेहरे पर उदासी छाई हुई थी। टोपी उतारकर उसने सलीब का निशान बनाया, मानो भगवान से प्रार्थना कर रहा हो कि उसे समुद्र में ऐसी भयानक मौत से बचा ले।

व्यग्रता भरी प्रतीक्षा में कोई पौना घंटा बीता।

आख़िर सिग्नलमैन, जो सारे वक़्त दूरबीन पर आंखें गड़ाए हुए था, ख़ुशी से चिल्लाया :

"नाव वापिस चल दी!"

जब वह पास आने लगी, तो बड़े अफ़सर ने सिग्नलमैन से पूछा :

"वह आदमी है नाव पर?"

"दिख नहीं रहा, सा'ब!" उसने जवाब दिया। अब उसकी आवाज़ इतनी ख़ुश न थी।

"लगता है मिला नहीं!" कप्तान के पास जाते हुए बड़े अफ़सर ने कहा।

'लड़ाकू' पोत का कमांडर अधेड़ उम्र का नाटे क़द का, मज़बूत काठी का आदमी था। उसके मांसल गालों और ठोड़ी पर घने काले बाल थे, जो अब सफ़ेद होने लगे थे। आंखें उसकी छोटी-छोटी थीं, बाज़ जैसी और वैसी ही तीक्ष्ण दृष्टि थी उसकी। उसने कंधा बिचकाया, प्रत्यक्षत: अपनी झुंझलाहट छिपाते हुए, और बोला :

"नहीं। नाव पर अच्छा अफ़सर है, अगर आदमी न मिलता, तो वह इतनी जल्दी न लौटता!"

"पर वह नाव पर दिख तो नहीं रहा।"

"हो सकता है, नीचे लेटा हो, इसीलिए दिख नहीं रहा... ख़ैर, अभी पता चल जाएगा।"

और कप्तान चबूतरे पर चक्कर काटने लगा। रह-रहकर वह रुक जाता और पास आ रही नाव पर नज़र डालता। आख़िर उसने बाइनोकुलर में देखा, बचाया हुआ आदमी तो उसे नज़र नहीं आया, लेकिन गलही पर बैठे अफ़सर के शांत, प्रसन्न चेहरे को देखकर वह समझ गया कि उन्होंने आदमी को बचा लिया है।

कप्तान के खिन्न चेहरे पर संतोष की मुस्कान फैल गई।

और कुछ मिनट बीतने पर नाव जहाज़ के पास आ गई और लोगों समेत उसे जहाज़ पर चढ़ा लिया गया।

अफ़सर के पीछे-पीछे खेवैये उसमें से निकलने लगे। उनके चेहरे लाल

पड़ गए थे, पसीने से वे तर-ब-तर थे और हांफ रहे थे। एक खेवैये का सहारा लेकर वह आदमी भी डेक पर उतरा, जिसे बचाया गया था। वह दस-ग्यारह साल का नीग्रो लड़का था। फटी हुई कमीज़ पहने था, जो उसके दुबले, सूखे, काले, चमचमाते शरीर का थोड़ा सा हिस्सा ही ढके हुए थी। वह बुरी तरह से भीग गया था।

लड़का मुश्किल से खड़ा हो पा रहा था, बुरी तरह से कांप रहा था, उसकी बड़ी-बड़ी धंसी हुई आंखों में अपार हर्ष था और साथ ही विस्मय भी, मानो उसे विश्वास न हो रहा हो कि बच गया।

"बिल्कुल अधमरे को मस्तूल से उतारा। बड़ी मुश्किल से बेचारे को होश में लाए हैं," अफ़सर कप्तान को रिपोर्ट दे रहा था।

"जल्दी से इसे रोगी कक्ष में ले जाओ!" कप्तान ने आदेश दिया।

लड़के को तत्क्षण रोगी कक्ष में ले जाया गया, उसका शरीर पोंछ कर सुखाया गया, बिस्तर में लिटाकर उसे कंबल ओढ़ा दिए और डाक्टर उसकी टहल करने लगा। उसके मुंह में ब्रांडी की कुछ बूंदें डालने लगा।

लड़का हौले से ब्रांडी निगल गया। आंखों से ही मिन्नत करता हुआ वह डाक्टर की ओर देख रहा था, मुंह की ओर इशारा कर रहा था।

ऊपर पाल चढ़ाए जाने लगे और पांच मिनट बाद ही 'लड़ाकू' पोत अपने पहले वाले मार्ग पर बढ़ चला। मल्लाह भी अपना बीच में छूट गया काम पूरा करने लगे।

"हब्शी छोकरे को बचा लिया!" चारों ओर मल्लाह खुशी-खुशी कह रहे थे।

"कैसा दुबला-पतला सा है!"

कुछ लोग रोगी कक्ष में जा रहे थे, यह पता लगाने कि लड़के का क्या हुआ।

"डाक्टर इलाज कर रहा है। देखो, शायद बचा ले!"

घंटे भर बाद कोर्शुनव नाम का मल्लाह यह खबर लाया कि हब्शी लड़का गहरी नींद सो रहा है, डाक्टर ने उसे गरम-गरम सूप के कुछ चम्मच दिए और वह सो गया ...

"अरे भाइयो, छोकरे के लिए डाक्टर ने ऐसा सूप बनवाया, कुछ भी नहीं डाला उसमें, बस सिर्फ़ गोश्त का उबला पानी ही समझो," कोर्शुनव बड़े जोश से कहे जा रहा था। वह इस बात पर ख़ुश था कि मशहूर गप्पी होने के बावजूद इस वक़्त सब उसकी बातों पर विश्वास कर रहे हैं और इस बात पर भी कि वह इस वक़्त झूठ नहीं बोल रहा और सब ध्यान से उसकी बातें सुन रहे हैं।

और मानो इस मौक़े का फ़ायदा उठाते हुए वह कहे जा रहा था:

"वो छोटा डाक्टर कह रहा था कि जब छोकरे को खाना खिला रहे थे, तो वह कुछ गिटपिट कर रहा था, मतबल कह रहा था: 'और दो, वो सूप'... वह तो डाक्टर के हाथ से प्याला ही छीन रहा था... पर ज़्यादा नहीं दिया, एकदम ज़्यादा खा लेगा, तो मर जाएगा।"

"तो छोकरे ने क्या किया?"

"कुछ नहीं, मान गया।"

उसी समय पानी के ड्रम के पास कप्तान का अरदली सोइकिन आया और उसने कप्तान के सिगार का टुर्रा सुलगाया। सबका ध्यान अरदली की ओर गया, किसी ने पूछा:

"अरे सोइकिन, कुछ सुना, हब्शी छोकरे का बाद में क्या करेंगे?"

लाल बालों वाला सोइकिन ख़ूब बन-ठन कर रहता था। वह अपने निजी कपड़े की बनी मल्लाहों की वर्दी की पतली कमीज़ और किरमिच के जूते पहने था। बड़ी शान से उसने सिगार का कश भरा और ऐसे अंदाज़ में मानो वह बहुत कुछ जानता हो, बोला:

"करेंगे क्या? गूड केप पर छोड़ देंगे, जब जहाज़ वहां पहुंचेगा तो।"

केप ऑफ़ गुड होप को वह गूड केप कहता था।

थोड़ी देर तक वह चुप रहा और फिर रोब सा दिखाता हुआ, कुछ घिन के से भाव के साथ बोला:

"और करना भी क्या है, काले हब्शी का? न कोई धरम इनका, न जात। एकदम जंगली हैं।"

"जंगली हों, चाहे कुछ हों, हैं तो सब ख़ुदा के बंदे... कुछ रहम होना चाहिए!" बूढ़े बढ़ई ज़ख़ारिच ने कहा।

तंबाकू पीने को जमा हुए मल्लाहों को ज़खारिच की बात अच्छी लगी थी।

"और वहां से छोकरा अपने घर कैसे पहुंचेगा? उसके भी तो मां-बाप होंगे!" किसी ने कहा।

"गूड केप में इन हब्शियों की भरमार है। अपने आप पता लगा लेंगे, कहां से है," सोइकिन ने जवाब दिया और टुर्रा पीकर चलता बना।

"बड़ा बनता फिरता है, अरदलिया!" बूढ़े बढ़ई ने ग़ुस्से से उसके पीछे चिल्लाकर कहा।

(४)

अगले दिन नीग्रो बालक अभी कमज़ोर ही था, पर हां सदमे के बाद वह इतना ठीक हो गया था कि मोटे, अधेड़ डाक्टर ने खुलकर मुस्कराते हुए लड़के का गाल थपथपाया और उसे प्याला भरकर शोरबा दिया। वह देख रहा था कि बालक कैसे जल्दी-जल्दी शोरबा निगल रहा है। अपनी बड़ी-बड़ी काली आंखों से, जिनकी सफ़ेदी पर तारे चमक रहे थे, कृतज्ञतापूर्वक डाक्टर की ओर देख रहा था।

इसके बाद डाक्टर ने यह जानना चाहा कि लड़का कैसे समुद्र में गिरा, कितनी देर भूखा रहा। लेकिन रोगी के साथ बातचीत करना असम्भव सिद्ध हुआ, बावजूद इसके कि डाक्टर ख़ूब अच्छी तरह इशारों से अपनी बात समझा रहा था। नीग्रो बालक को प्रत्यक्षत: डाक्टर से ज़्यादा अंग्रेज़ी आती थी लेकिन डाक्टर की ही भांति वह भी जो थोड़े बहुत शब्द जानता था, उन्हें तोड़-मरोड़कर बोलता था।

वे एक दूसरे की बात नहीं समझ रहे थे।

तब डाक्टर ने अपने सहायक को जवान वारंट अफ़सर को बुलाने भेजा, जिसे अफ़सरों के कमरे में सब 'पेत्या' कहकर बुलाते थे।

"पेत्या, आप तो अंग्रेजी अच्छी बोल लेते हैं, ज़रा इससे बात तो कीजिए, मेरे से नहीं हो पा रही," डाक्टर ने हंसते हुए कहा। "और इसे यह भी कह दीजिए कि तीन दिन में मैं इसे छुट्टी दे दूंगा।"

वारंट अफ़सर खाट के पास बैठकर बालक से सवाल पूछने लगा। वह छोटे-छोटे वाक्य बोल रहा था और वे भी धीरे-धीरे, बिल्कुल स्पष्टतः। नन्हा नीग्रो शायद उसकी सारी बात तो नहीं, पर काफ़ी कुछ समझ रहा था और थोड़े-बहुत जो शब्द जानता था, उनको ही उल्टे-सीधे बोलते हुए जल्दी-जल्दी जवाब दे रहा था, हां साथ ही अर्थपूर्ण ढंग से इशारे भी करता जा रहा था।

काफ़ी लंबी और मुश्किल बातचीत के बाद वारंट अफ़सर ने अफ़सरों के कमरे में नीग्रो लड़के की मोटे तौर पर सही कहानी सुनाई।

लड़का अमरीकी जहाज़ 'बेट्सी' पर था और कप्तान का नौकर था (अफ़सर ने अपनी ओर से कहा: कमीने कप्तान का), लड़का कप्तान के कपड़ों से धूल झाड़ता था, जूते साफ़ करता था और कॉफ़ी के साथ ब्रांडी या ब्रांडी के साथ कॉफ़ी देता था। कप्तान लड़के को 'बॉय' कहता था और नीग्रो बालक को यह विश्वास था कि यही उसका नाम है। मां-बाप की उसे याद न थी। कप्तान ने साल भर पहले मोज़म्बीक में लड़के को ख़रीदा था और रोज़ उसे पीटता था। जहाज़ सेनेगाल से रियो जा रहा था, हब्शियों को लादकर ले जा रहा था। दो रात पहले दूसरा जहाज़ उससे ज़ोर से टकराया (इसका अनुमान अफ़सर ने इस बात से लगाया कि नीग्रो बालक ने दो-तीन बार "ठां-ठां-ठां" कहा और फिर रोगी कक्ष की दीवार पर धीरे से मुक्का मारा)। जहाज़ डूब गया। लड़का पानी में जा गिरा, मस्तूल के टुकड़े से अपने आप को बांध लिया और उसी पर दो दिन, दो रातें काटीं।

अपने भयानक जीवन की कहानी अगर बालक शब्दों में कह भी सकता, तो भी वे इतने भावपूर्ण न होते। शब्दों से अधिक अच्छी तरह उसकी कहानी उसकी नज़रें कह रही थीं, जिनमें इस बात पर आश्चर्य था कि उसके साथ इतना अच्छा सलूक किया जा रहा है। दयनीय पिल्ले की भांति कृतज्ञता भरी आंखों से वह डाक्टर, उसके सहायक और वारंट अफ़सर को देख रहा था। इन सबसे भी बढ़कर प्रभावित करती थी उसकी पतली सी, चमकती हुई काली पीठ, जिस पर सारी पसलियां दिखती थीं – सारी पीठ कोड़े लगने से सांटों से भरी हुई थी।

वारंट अफ़सर और डाक्टर की बातें सुनकर अफ़सरों के कमरे में सब

स्तब्ध रह गए। किसी ने कहा कि इस बेचारे को केपटाउन में रूसी वाणिज्यदूत के संरक्षण में दे देना चाहिए और लड़के के लिए चंदा जमा करना चाहिए।

नन्हे नीग्रो की कहानी से मल्लाह और भी अधिक प्रभावित हुए। उसी दिन शाम को वारंट अफ़सर के अरदली अर्तेमी मूखिन के मुंह से उन्होंने वारंट अफ़सर की बताई कहानी सुनी। अर्तेमी कहानी में अपनी ओर से नमक-मिर्च लगाने से भी बाज़ न आया ताकि यह पता चले कि अमरीकी कप्तान कैसा जल्लाद था।

"अरे, भैया रे, हर रोज़ कमबख़्त लौंडे को पीटता था। ज़रा सी कोई बात हुई, बस जबड़े पर घूंसे मारने लगा, एक दो, तीन ... ख़ूनोंख़ून कर देता और खूंटी से कोड़ा उतारता, कोड़ा भी भैया रे ऐसा-वैसा नहीं था, सबसे मोटी पेटी का बना और बस बेचारे की धुनाई करने लगता," अर्तेमी कह रहा था, अपनी कल्पना की उड़ान से वह अधिकाधिक जोश में आता जा रहा था, वह नीग्रो बच्चे का जीवन भयानकतम रूप में दिखाना चाहता था। "हरामी का पिल्ला यह तक न देखता था कि उसके सामने बेज़बान बच्चा है, हब्शी हुआ तो क्या ... अभी तक बेचारे की सारी पीठ सांटों से भरी हुई है। डाक्टर कह रहा था: देखा नहीं जाता!" भावुक अर्तेमी ने कहा।

मल्लाह स्वयं ही अतीत में भूदास थे, उनके लिए यह सब नमक-मिर्च लगाने की कोई ज़रूरत न थी। उन्हें याद था कि कैसे उनकी पीठें सेंकी जाती थीं। उनकी सारी सहानुभूति बालक के साथ थी और अमरीकी कप्तान को वे खूब बददुआएं दे रहे थे, अगर अभी तक शार्कें उसे हड़प नहीं गईं, तो जल्दी से जल्दी हड़प जाएं।

"हमारे यहां तो अब तक सब ईसा के भक्तों को आज़ादी मिल गई होगी।* पर इन अमरीकियों के यहां अभी भी ग़ुलाम हैं क्या?" किसी अधेड़ मल्लाह ने पूछा।

"हां, अभी तक हैं।"

"अजीब बात है ... आज़ाद लोग हैं, पर फिर भी ..." अधेड़ मल्लाह ने धीरे-धीरे बोलते हुए कहा।

---

* अभिप्राय भूदास प्रथा खत्म होने से है। – सं०

"उनके यहां हब्शी हमारे यहां के दासों जैसे हैं।" अर्तेमी ने कहा, जो अफ़सरों के कमरे में इस सिलसिले में कुछ बातें सुन चुका था। "इसी बात को लेकर उनकी आपस में लड़ाई हो रही है।* कुछ अमरीकी चाहते हैं कि सारे हब्शी, जो उनके यहां रहते हैं, आज़ाद हों, और दूसरे यह बात नहीं मानते, ये वही हैं, जिनके पास ग़ुलाम हब्शी हैं। बस इसी बात पर एक दूसरे को भून रहे हैं... सा'ब लोग कहते हैं कि जो अमरीकी हब्शियों के साथ हैं न, वही जीतेंगे। अमरीकी ज़मींदारों का सफ़ाया कर देंगे!" ख़ुश होते हुए अर्तेमी ने कहा।

"हां, भगवान उनकी मदद करेगा... हब्शी भी तो आज़ादी से रहना चाहते हैं... चिड़िया तक क़ैद में नहीं रह सकती, फिर आदमी तो आदमी है," ज़खारिच बढ़ई ने कहा।

सांवला जवान मल्लाह, वही जो कह रहा था कि जहाज़ की नौकरी ख़तरनाक है, बड़े ध्यान से सारी बातचीत सुन रहा था, आख़िर उसने पूछा:

"तो, भई अर्तेमी, अब यह हब्शी छोकरा आज़ाद होगा?"

"और नहीं तो क्या? साफ़ बात है आज़ाद होगा," अर्तेमी ने दृढ़तापूर्वक कहा, हालांकि मन ही मन उसे इस बात पर पूरा विश्वास नहीं था, क्योंकि स्वामित्व के अमरीकी क़ानूनों के बारे में वह कुछ भी नहीं जानता था।

लेकिन उसकी अपनी समझ यह कहती थी कि लड़का आज़ाद होना चाहिए। मुआ मालिक तो मछलियों का निवाला बन चुका है, तो फिर और क्या बात हो सकती है।

और वह बोला:

"अब बस गूड केप में छोकरे को पासपरट मिल जाए और बस फिर जहां जी चाहे वह जाए।"

पासपोर्ट के इस विचार ने उसके बचे-खुचे संदेह भी दूर कर दिए।

"हां, बस यही तो बात है!" सांवला मल्लाह ख़ुशी से बोला।

---

* कहानी अमरीका में गृहयुद्ध के दिनों की है। – ले०

उसके लाल गालों और नेक आंखों वाले चेहरे पर मीठी मुस्कान छा गई, जिससे अभागे नीग्रो के लिए उसकी खुशी प्रकट होती थी।

सांझ का झुटपुटा तेज़ी से उष्णकटिबंध की सुहानी रात में बदल गया। आकाश पर असंख्य तारे चमक उठे, मखमली ऊंचाइयों में उनकी उज्ज्वल झिलमिल हो रही थी। दूरी में महासागर काला पड़ गया, जहाज़ के अगल-बगल और दबूसे के पीछे उसमें स्फुर-दीप्ति हो रही थी।

शीघ्र ही प्रार्थना की सीटी बजी और फिर जिन मल्लाहों को तड़के ड्यूटी देनी थी वे खाटें लेकर डेक पर सो गए।

जो मल्लाह ड्यूटी पर थे, वे रस्सों पर बैठे धीमी आवाज़ में बतियाने लगे। उस रात को कई झुंडों में नीग्रो लड़के की ही चर्चा होती रही।

(५)

दो दिन बाद सदा की भांति सुबह सात बजे डाक्टर रोगी कक्ष में आया, अपने एकमात्र रोगी की जांच की और यह पाया कि वह ठीक हो गया है, बिस्तर से उठ सकता है और ऊपर जाकर मल्लाहों का खाना खा सकता है। यह सब उसने लड़के को इशारों से ही समझाया, जो इस बार जल्दी ही समझ गया। लड़के के चेहरे पर रौनक आ गई थी और वह यह भूल ही गया लगता था कि कुछ दिन पहले वह मौत के पंजों में था। वह झट से खाट से उछल खड़ा हुआ। वह मल्लाहों का लंबा कुर्ता, जो उसके बदन पर बोरे सा लगता था, पहने हुए ही ऊपर जाकर धूप सेंकना चाहता था। लेकिन उसकी यह वेशभूषा देख कर डाक्टर ज़ोर से हंसने लगा और सहायक भी खी-खी कर उठा, लड़का सकपका गया। वह केबिन के बीचोंबीच खड़ा था, उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे और क्यों डाक्टर उसकी कमीज़ खींचता हुआ हंसे जा रहा है।

तब नीग्रो बालक ने जल्दी से कमीज़ उतार दी और नंगा ही खिसक जाना चाहा, पर सहायक ने उसकी बांह थाम ली और डाक्टर हंसते हुए कहता जा रहा था :

"नो, नो, नो।"

और इसके बाद इशारे से लड़के को समझाया कि वह बोरेनुमा-कमीज़ पहन ले।

"इसे क्या पहनाएं फ़िलीपव?" डाक्टर चिंतित सा घुंघराले बालों वाले बांके से तीस वर्षीय सहायक से पूछ रहा था। "इसकी तो हमने सोची ही नहीं।"

"जी हां, इसकी तो कल्पना नहीं हुई। अब अगर इसकी कमीज़ घुटनों तक काट दें और कमर पर पेटी बांध दे, तो खूब जोड़ बैठेगा," सहायक ने कहा। जब वह कोई बढ़िया बात कहना चाहता था तो अटपटे शब्द कह डालता था, जिससे सब उसका मज़ाक़ उड़ाते थे।

"जोड़ बैठेगा का क्या मतलब?" डाक्टर मुस्कराया।

"जी, वही ... जोड़ बैठेगा ... सब जानते हैं हजूर, जोड़ बेठैगा का मतबल क्या है!" सहायक ने बुरा मानते हुए कहा। "आरामदेह भी होगा, अच्छा भी लगेगा।"

"नहीं, भई, यह तो कोई 'जोड़ नहीं बैठेगा'। बस हंसी की बात ही होगी। हां, कुछ तो पहनाना चाहिए इसे, जब तक मैं कप्तान से इसके नाप के कपड़े सिलवाने की आज्ञा नहीं ले लेता।"

"जी हां, कपड़े तो बढ़िया सिल सकते हैं ... जहाज़ पर हैं ऐसे मल्लाह, जो दर्ज़ी का काम जानते हैं। वे सी देंगे।"

उसी क्षण रोगी कक्ष के दरवाज़े पर किसी ने हौले से दस्तक दी।

"कौन है? आ जाओ," डाक्टर ने कहा।

दरवाज़े में पहले तो लाल सा, थोड़ा फूला हुआ चेहरा दिखा, जिसके अगल-बगल सन के रंग के गलमुच्छे लटक रहे थे, नाक अजीब से, "संदेहास्पद" रंग की थी, पर आंखों से फुर्ती और नेकी टपकती थी। इसके बाद मल्लाह इवान लूच्किन की नाटी, सुघड़ और मज़बूत आकृति प्रकट हुई।

मल्लाह अधेड़ था, लगभग चालीस बरस का, पंद्रह बरस से फ़ौजी बेड़े में था। इस क्लिपर पोत पर वह एक सबसे अच्छा मल्लाह था और तट पर सबसे बढ़कर पियक्कड़। कई बार तो वह अपने कपड़े तक बेचकर शराब पी

डालता और केवल अंतरीय पहने जहाज़ पर लौटता। अगले दिन सुबह एकदम बेफ़िक्र सा सज़ा सुनने को हाज़िर होता।

"हज़ूर, यह मैं..." लूच्किन खोखली आवाज़ में बोला। वह खड़ा-खड़ा पैर बदल रहा था। उसके नंगे पांवों पर उभरी नसें दिख रही थीं। खुरदरे हाथ से वह अपनी पतलून को मसोस रहा था।

दूसरे हाथ में छोटी सी गठरी थी।

वह डाक्टर की ओर ऐसे संकोच और दोषी भाव से देख रहा था, जो पियक्कड़ों और अपने ऐब जाननेवाले लोगों के चेहरे और आंखों में प्राय: होता है।

"क्या चाहिए लूच्किन? बीमार पड़ गया क्या?"

"बिल्कुल नहीं, हज़ूर, वो... छोकरे के लिए कपड़े लाया हूं। सोचा नंगा है, सो सी दिए, नाप भी मैंने पहले ले लिया था। इजाज़त हो तो दे दूं, हज़ूर।"

"ज़रूर दो भई... बड़ी खुशी की बात है," डाक्टर चकित सा कह रहा था। "हम इसी सोच में पड़े हुए थे कि छोकरे को क्या पहनाएं, तुमने हमारे से पहले ही सब सोच लिया।"

"ख़ाली वक़्त था हज़ूर," लूच्किन मानो क्षमा मांग रहा था।

इतना कहकर उसने छींट के रूमाल में से मल्लाहों की वर्दी वाली छोटी सी कमीज़ और वैसी ही पतलून निकाली। उन्हें झटका और भौचक्के खड़े लड़के को सौंपा।

"ले मक्सीम्का! कपड़ा वेरी गूड है भैया! ले पहन ले, देखता हूं कैसे बैठता है। चल, मक्सीम्का!" नीग्रो बालक की ओर स्नेह से देखते हुए उसने खुशी से कहा, अब उसकी आवाज़ में दोष की भावना नहीं थी, जैसी कि डाक्टर से बातें करते समय थी।

"अरे, तू इसे मक्सीम्का क्यों कह रहा है?" डाक्टर हंस पड़ा।

"और क्या हज़ूर? मक्सीम्का ही है, क्योंकि इसे संत मक्सीम के दिन बचाया था, सो बस यह मक्सीम्का ही हुआ... और फिर इसका कोई नाम भी तो नहीं, कैसे बुलाएंगे इसे।"

नए कपड़े पहनकर तो लड़के की ख़ुशी का वार-पार न रहा। लगता था पहले कभी भी उसने ऐसे कपड़े नहीं पहने।

लूच्किन ने लड़के को इधर-उधर घुमा कर देखा, कमीज़ खींची, सहलाई और पाया कि कपड़े बिल्कुल ठीक बैठे हैं।

"अब चल ऊपर चलें मक्सीम्का... धूप सेंकना। इजाजत है, हज़ूर?"

डाक्टर ने सद्भावना से मुस्कराते हुए सिर हिलाया और मल्लाह नीग्रो बालक का हाथ पकड़कर डेक के अग्रभाग में ले गया। दूसरे मल्लाहों को उसे दिखाते हुए उसने कहा:

"सो, यह रहा मक्सीम्का! बस अब भूल जाएगा दुष्ट अमरीकी को। जानता है कि रूसी मल्लाह इसका मन नहीं दुखाएंगे!"

उसने प्यार से लड़के का कंधा थपथपाया और उसके घुंघराले सिर की ओर इशारा करते हुए कहा:

"कोई बात नहीं, भैया टोपी भी बना देंगे... और जूते भी, बस थोड़ा समय चाहिए।"

लड़का कुछ नहीं समझ रहा था, पर मल्लाहों के संवलाए चेहरे, उनकी सहानुभूति भरी मुस्कानें देखकर वह यह अनुभव कर रहा था कि यहां उसे कुछ नहीं होगा।

और वह अपने चमकीले, दूधिया दांत दिखाता हंस रहा था, दक्षिण के अपने प्यारे सूरज की गर्मी पा रहा था।

इस दिन से सब उसे मक्सीम्का कहने लगे।

(६)

डेक पर मल्लाहों जैसे कपड़े पहने नन्हे नीग्रो से मल्लाहों को परिचित कराके लूच्किन ने तुरंत ही यह घोषणा की कि वह लड़के की देखभाल करेगा, उसका खास ख्याल रखेगा, इसका उसे हक़ है, क्योंकि उसने लड़के को सजाया है और उसका नाम रखा है।

लूच्किन ने किसी से इस बारे में एक शब्द भी नहीं कहा कि इस दुबले-पतले अभागे हब्शी बच्चे को देखकर जिसने अपने जीवन के आरम्भ में ही अमरीकी कप्तान के हाथों कितने दुख झेले हैं, उसके मन में कैसी अनुकम्पा जागी है, कि उसकी अपनी ठूंठ सी ज़िंदगी भी पहले कितनी दुख भरी रही है। आम रूसी लोगों की ही भांति वह दूसरों के सामने अपनी भावनाएं प्रकट करते हुए शर्माता था और शायद इसीलिए मक्सीम्का का ख़्याल रखने की अपनी इच्छा का कारण यह बताया कि हब्शी बड़ा मज़ेदार है, बिल्कुल बंदर जैसा।

हां, साथ ही उसने पेत्रोव मल्लाह की ओर नज़र दौड़ाते हुए, जो नए मल्लाहों को तंग करने के लिए मशहूर था, दृढ़तापूर्वक कहा कि अगर ऐसा "एकदम कमीना आदमी" निकलेगा, जो 'अनाथ' बच्चे को छेड़ेगा, तो उसका वास्ता सीधे लूच्किन से होगा। और मानो यह स्पष्ट करते हुए कि उससे वास्ता पड़ने का मतलब क्या है, वह बोला:

"ऐसा हुलिया बना दूंगा कि बस वह याद रखेगा। बच्चे को तंग करना सबसे बड़ा पाप है... ईसाई हो या हब्शी, है तो बच्चा ही... और कोई उसे हाथ नहीं लगाए।"

सब मल्लाहों ने तत्परता से मक्सीम्का पर लूच्किन का अधिकार स्वीकार कर लिया। हां, कई ऐसे भी थे, जिन्हें इस बात में कोई ख़ास विश्वास नहीं था कि लूच्किन ने अपने ऊपर जो दायित्व लिया है, उसे ठीक से निभा सकेगा।

ऐसा पियक्कड़ और दुस्साहसी मल्लाह लड़के की देखरेख क्या करेगा?

एक पुराने मल्लाह ने चुटकी लेते हुए पूछा:

"तो तू लूच्किन मक्सीम्का की दाई बनेगा?"

"दाई ही समझ लो," लूच्किन ने हंसते हुए जवाब दिया। मज़ाक़ की उसने कोई परवाह नहीं की। "क्यों भाइयो, इतना भी नहीं कर सकता क्या मैं? अरे किसी साहबज़ादे की देखभाल थोड़े ही करनी है... इस कलुए के लिए भी कपड़ों का इंतज़ाम करना है... दूसरा जोड़ा सीना होगा, टोपी बनानी होगी... डाकदर कहता था, जहाज़ से सरकारी माल ले देगा... आख़िर मक्सी-म्का जब गूड केप पर रह जाएगा, तो याद करेगा रूसी मल्लाहों को। कम से कम नंगा तो नहीं होगा।"

"तू इससे बातें कैसे करेगा? न वह तेरी कुछ समझता है, न तू उसकी।"

"कर लेंगे बातें भी। तुम देखते रहना!" अनबूझ विश्वास के साथ लूच्किन ने कहा। "हब्शी है तो क्या हुआ, है तो समझदार... अरे, मैं उसे अपनी बोली सिखा दूंगा... सब समझ लेगा वह..."

और लूच्किन ने नन्हे नीग्रो पर स्निग्ध नज़र डाली, जो जहाज़ के पहलू से सटा कौतूहलवश इधर-उधर देख रहा था।

नीग्रो बालक ने प्रेम और स्नेह में पगी यह दृष्टि देखी और अपने सफ़ेद दांत चमकता हुआ मुस्करा दिया। बिना शब्दों के ही वह यह समझ रहा था कि यह मल्लाह उसका मित्र है।

साढ़े ग्यारह बजे मल्लाहों ने अपना सुबह का काम खत्म किया। डेक पर वोद्का का ड्रम लाया गया और दोनों मेटों और आठ जूनियर अफ़सरों ने घेरा बनाकर सीटी बजाई। मल्लाह इस सीटी को "कोयल की कूक" कहते थे। लूच्किन खुशी से मुस्कराया और अपने मुंह की ओर इशारा करते हुए लड़के से बोला: "मांगता है!" और दौड़ता हुआ पिछले डेक पर चला गया। लड़का असमंजस में खड़ा रहा।

पर उसका असमंजस शीघ्र ही दूर हो गया।

वोद्का की तेज़ गंध सारे डेक पर फैल गई। मल्लाह अपने खुरदरे हाथों से नाक पोंछते पिछले डेक से आ रहे थे, उनके गम्भीर चेहरों पर संतोष छलक रहा था। नीग्रो बालक को याद आया कि 'बेट्सी' पर भी मल्लाहों को हफ़्ते में एक बार रम का गिलास मिलता था और यह कि कप्तान रोज़ाना ही रम पीता था और लड़के को लगता था कि वह ज़रूरत से ज़्यादा पीता है।

लूच्किन मक्सीम्का के पास लौट आया था। वह बड़े अच्छे मूड में था, उसने लड़के की पीठ थपथपाई और बोला:

"गूड वोद्का! वेरी गूड, मक्सीम्का!"

मक्सीम्का ने भी सिर हिला दिया और बोला:

"वेरी गुड!"

यह देखकर कि लड़का इतनी जल्दी उसकी बात समझ गया, लूच्किन बहुत खुश हुआ और चिल्लाया:

"अरे वाह मक्सीम्का! सब समझता है... चल अब खाना खाने चलें... भूख लगी है?"

और वह जबड़े चलाने लगा।

यह समझना भी कठिन न था, ख़ास तौर पर इसलिए कि लड़के ने नीचे से मल्लाहों को लकड़ी के बड़े-बड़े डोंगों में खाना लाते देखा, जिनसे बड़ी प्यारी गंध आ रही थी।

नन्हा नीग्रो भी सिर हिलाने लगा और उसकी आंखें ख़ुशी से चमक उठीं।

"देखो तो सब समझता है! कैसा अक्लमंद है!" लूच्किन ने कहा। हब्शी लड़के से उसका लगाव पल-पल बढ़ रहा था और इस बात का भी उसे मान था कि वह लड़के को अपनी बात समझा सकता है। मक्सीम्का का हाथ पकड़कर वह उसे ले चला।

डेक पर तिरपाल बिछाकर बारह-बारह के झुंड बैठे थे। श्ची से भरे डोंगों के गिर्द घेरा बनाकर वे बैठे थे और चुपचाप बड़ी लगन से, जैसे कि आम आदमी खाते हैं, खाना खा रहे थे। श्ची उस बंदगोभी से बनी थी, जिसे क्रोन्श्तात में ही काटकर और नमक लगाकर लकड़ी के पीपों में जहाज़ पर रख लिया गया था।

खाना खाते लोगों के बीच संभलकर बढ़ते हुए लूच्किन मक्सीम्का को अपने साथियों के पास ले गया। उन्होंने लूच्किन के इंतज़ार में अभी खाना शुरू नहीं किया था। लूच्किन उनसे बोला:

"क्यों भाइयो, मक्सीम्का को अपने साथ बिठाओगे?"

"अरे पूछने की बात क्या है? बैठो दोनों जने!" बूढ़े बढ़ई ज़खारिच ने कहा।

"शायद और किसी को ऐतराज हो... साफ़-साफ़ कह दो, भई!" लूच्किन ने फिर से पूछा।

सब ने एक स्वर में जवाब दिया कि मक्सीम्का उनके साथ खाना खाए और थोड़ा हटकर उन दोनों के बैठने के लिए जगह बनाई। मल्लाह मज़ाक़ करने लगे:

"अरे क्या, हमारे हिस्से का खा जाएगा!"

"सारा गोश्त तो नहीं हड़प जाएगा!"

"तेरे कलुए के लिए हमने चम्मच भी ले लिया है।"

"मैं तो, भाइयो, इसलिए पूछ रहा था कि यह हब्शी है... ईसाई नहीं," लूच्किन ने बैठकर और अपने पास मक्सीम्का को बिठाते हुए कहा। "पर मैं तो यह समझता हूं कि भगवान के सामने सब बराबर हैं... रोटी तो हर कोई खाना चाहता है।"

"और नहीं तो क्या? भगवान ने सबको ज़मीन पर बसाया है। उसके लिए तो कोई फ़र्क़ नहीं। वो तो सोइकिन अरदलिये जैसे बेवकूफ़ ये बातें करते हैं कि ईसाई है, नहीं है!" बूढ़े ज़खारिच ने फिर से कहा।

ज़खारिच की बात से सब सहमत लगते थे। रूसी मल्लाह तो सदा ही जिन अलग-अलग धर्मों, नस्लों के लोगों से मिलते हैं, सबके प्रति बड़ी सहिष्णुता दिखाते हैं।

लूच्किन के दल के साथियों ने मक्सीम्का का खुले दिल से स्वागत किया। किसी ने उसे चम्मच दिया, दूसरे ने भिगोया हुआ रस और सब बड़े प्यार से सहमे-सहमे बैठे लड़के को देख रहे थे। लगता था वह गोरी चमड़ी वालों से ऐसा प्यार पाने का आदी नहीं है। सब लोग मौन नज़रों से उसे न डरने को कह रहे थे।

"अच्छा तो, चलो शुरू करें, नहीं तो श्ची ठंडी हो जाएगी।" ज़खारिच बोला।

सबने सलीब का निशान बनाया और अपने-अपने चम्मच से बारी-बारी डोंगे में से श्ची लेने लगे।

"मक्सीम्का तू खाता क्यों नहीं? खा न, बुद्धू! बड़ी अच्छी श्ची है! गूड श्ची!" चम्मच की ओर इशारा करते हुए लूच्किन कह रहा था।

नीग्रो बालक को अमरीकी जहाज़ पर कभी गोरों के साथ खाना नहीं दिया जाता था, वहां उसे जूठन ही मिलती थी, जिसे वह कहीं अंधेरे कोने में दुबककर खाता था। वह ललचाई आंखों से श्ची की ओर देख रहा था, राल निगल रहा था, पर खाने में झिझक रहा था।

"देखो तो कैसा डरपोक है! उस अमरीकी शैतान ने बड़ा डराया होगा

बेचारे को!" मक्सीम्का के बगल में बैठे ज़खारिच ने कहा। और उसका सिर सहलाते हुए अपना चम्मच उसके मुंह के पास ले गया...

इसके बाद मक्सीम्का की सारी झिझक दूर हो गई और कुछ ही क्षणों में वह दबादब श्ची खाने लगा, फिर नमकीन गोश्त और बाजरे की खिचड़ी भी उसने खाई।

लूच्किन रह-रहकर उसकी हिम्मत बढ़ा रहा था, कह रहा था:

"गूड मक्सीम्का! वेरी गूड, भैया! खाए जा, मज़े से।"

(७)

सारे जहाज़ पर खाना खाकर सो रहे मल्लाहों के खर्राटे सुनाई दे रहे थे। सिर्फ़ ड्यूटी वाले मल्लाह नहीं सो रहे थे, और कहीं-कहीं कोई मल्लाह ख़ाली समय का लाभ उठाते हुए अपने जूते ठीक कर रहा था, कमीज़ सी रहा था या कपड़े-लत्ते की मरम्मत कर रहा था।

'लड़ाकू' पोत के पालों में हवा भरी हुई थी और उसे बढ़ाए लिए जा रही थी। ड्यूटी के मल्लाहों के लिए करने को कुछ था ही नहीं। हां अगर कहीं काली घटा बढ़ती दिखती, तो उन्हें ठीक समय पर पाल समेटने होते, ताकि उष्णकटिबंध की मूसलाधार बारिश और तेज़ हवा का सामना तैयार, यानी ख़ाली मस्तूलों से किया जा सके, जिससे झंझा के प्रतिरोध का क्षेत्रफल कम से कम हो।

परंतु क्षितिज एकदम साफ़ था। कहीं पर भी वह सुरमई धब्बा नहीं दिख रहा था, जो तेज़ी से बढ़ता है, विशाल काली घटा बनकर क्षितिज और सूरज को अपने गर्भ में छिपा लेता है। हवा के तेज़ झोंके जहाज़ को एक ओर को झुका-झुका देते हैं, डेक पर मूसलाधार पानी बरसता है, मल्लाहों को बुरी तरह से भिगो देता है और जितनी तेज़ी से यह झंझा आती है, उतनी ही तेज़ी से चली भी जाती है।

फिर से धूप खिल उठती है, डेक, रस्सों, पालों और मल्लाहों की कमीज़ों को सुखाती है। फिर से ऊपर नीला आकाश और नीचे नीला महासागर होता

है, जिसके वक्ष पर सारे पाल चढ़ाए जहाज़ हवा के बल बढ़ता चला जाता है।

इस समय भी चारों ओर सुहावना दृश्य था। जहाज़ पर भी शांति थी। सब आराम कर रहे थे और इस समय नितांत आवश्यक होने पर ही मल्लाहों को बुलाया जा सकता था, अन्यथा नहीं – यह जहाजों की पुरानी परम्परा है।

अगले मस्तूल के पास छाया में लूच्किन बैठा था, वह भी आज नहीं सो रहा था। ड्यूटी वाले यह देखकर दंग थे, वे जानते थे कि लूच्किन सोने में उस्ताद है।

कुछ गुनगुनाता हुआ लूच्किन किरमिच के टुकड़े से जूते काट रहा था। रह-रहकर वह अपने पास ही मीठी नींद में सोए मक्सीम्का और उसके पांवों की ओर देखता, मानो यह अनुमान लगा रहा हो कि उसने खाने के तुरंत बाद ही इन पांवों का जो नाप लिया है, वह ठीक है या नहीं।

उसका नाप ठीक ही लगता था, वह फिर से काम में जुट गया और अब सफ़ेद पतलून में से दिख रहे काले पांवों की ओर उसका ध्यान नहीं जा रहा था।

यह सोचकर कि वह इस अभागे अनाथ बच्चे के लिए "अब्वल दरजे" के जूते बना देगा और भी उसे जो कुछ चाहिए सी देगा, लूच्किन का मन हर्ष-विभोर हो रहा था। फिर उसे अपनी मल्लाह की ज़िंदगी याद हो आई। उसमें याद करने को कुछ ख़ास था नहीं: अंधाधुंध पीना और सरकारी कपड़ा-लत्ता बेचकर पी लेने पर कोड़े खाना – यही थी उसकी सारी ज़िंदगी।

लूच्किन इस निष्कर्ष पर अकारण ही नहीं पहुंचा कि अगर वह इतना दुस्साहसी मल्लाह न होता, जिसकी निडरता देखकर सभी कप्तान और अफ़सर दंग रह जाते थे, तो वह कब का क़ैदियों की टुकड़ी में होता।

"काम देखकर दया करते थे!" उसने अपने आप से कहा, न जाने क्यों गहरी सांस ली और बोला: "यही तो अड़ंगा है।"

यह अड़ंगा किस बात में था: इस बात में कि वह बेतहाशा पीता था और किसी भी बंदरगाह में (सिवाय क्रोन्श्तात के) सबसे पास वाले अड्डे के आगे कभी नहीं पहुंचा, या इस बात में कि वह निडर मल्लाह था और केवल इसलिए क़ैदियों की टुकड़ियों में जाने से बचा रहा था, – यह कहना मुश्किल था। एक बात निस्संदेह थी: जीवन में किसी "अड़ंगे" के प्रश्न पर

लूच्किन सोच में पड़ गया था, उसका गुनगुनाना बंद हो गया और आख़िर वह बोला :

"मक्सीम्का के लिए बंडी भी सीनी चाहिए ... बंडी के बिना भला कैसे काम चलेगा ?"

खाने के बाद के आराम के एक घंटे में लूच्किन ने मक्सीम्का के जूतों के लिए साज और तलवे काट लिए। तलवे नए ही थे, सरकारी माल के, जो लूच्किन ने सुबह ही एक किफ़ायती मल्लाह से उधार लिए थे, जिसके पास अपने जूते थे। लूच्किन जानता था कि उसके पास पैसे नहीं रहते थे, ख़ास तौर पर तट पर उतरने पर, इसलिए उसने ख़ुद ही यह सुझाया कि क़र्ज़े के पैसे मेट ही उसकी तनख़्वाह में से काट कर दे देगा।

मेट की सीटी बजी और उसके बाद मेट वसीली येगोरोविच, या जैसा कि मल्लाह उसे कहते थे – येगोरिच "भोंपू" – ने उठने का हुक्म दिया। लूच्किन मीठी नींद सो रहे मक्सीम्का को जगाने लगा। लूच्किन के विचार में मक्सीम्का "सवारी" ही था, पर तो भी उसे मल्लाहों की तरह रहना चाहिए था, ताकि कोई अप्रिय बात न हो, ख़ास तौर पर येगोरिच की ओर से। लूच्किन यह मानता था कि येगोरिच नेक आदमी है, पर ताव में आकर वह नीग्रो बालक को भी "क़ायदा बिगाड़ने" के लिए झापड़ रसीद कर सकता था, सो अच्छा हो कि वह शुरू से ही क़ायदा सीखे।

"उठ, मक्सीम्का !" बालक का कंधा झकझोड़ते हुए लूच्किन प्यार से कह रहा था।

मक्सीम्का ने अंगड़ाई ली, आंखें खोलीं और चारों ओर नज़र दौड़ाई। यह देखकर कि सभी मल्लाह उठ खड़े हुए हैं और लूच्किन अपना काम समेट रहा है, मक्सीम्का झट से उठ खड़ा हुआ और वफ़ादार कुत्ते की तरह लूच्किन की आंखों में झांकने लगे।

"अरे तू डर नहीं, भैया ... है न बुद्धू ... हर बात से डरता है ! यह देख, तेरे लिए जूते बना रहा हूं।"

नीग्रो बालक की समझ में कुछ नहीं आ रहा था कि लूच्किन उसके पांवों और किरमिच के टुकड़ों की ओर दिखाते हुए क्या कह रहा है, पर वह मुस्कराए

जा रहा था, यह महसूस करते हुए कि उससे कुछ अच्छी बात कही जा रही है। लूच्किन ने उसे इशारा किया और वह उसके पीछे-पीछे मल्लाहों के रहने के निचले डेक पर चला गया। वहां बड़े कौतूहल से वह देखने लगा कि कैसे लूच्किन ने कपड़ों से भरी अपनी किरमिच की संदूकची में काम रखा। लूच्किन ने अपनी टोपी उतारी और कभी टोपी, तो कभी लड़के के सिर की ओर इशारा करते हुए शब्दों से भी और इशारों से भी यह समझाने का यत्न करने लगा कि मक्सीम्का के पास भी ऐसी ही टोपी होगी, सफ़ेद खोल और नीले फ़ीते वाली, पर वह फिर से कुछ नहीं समझ पा रहा था और बस कृतज्ञतापूर्वक मुस्कराए जा रहा था।

नन्हा नीग्रो अपने सारे हृदय से इन गोरे लोगों की सद्भावना अनुभव कर रहा था, जो 'बेट्सी' के गोरों से बिल्कुल अलग भाषा बोलते थे। यह लाल मिर्च जैसी नाक और सन के रंग के बालों वाला मल्लाह तो कितना उदार था – ऐसे शानदार कपड़े उसने दिए थे, इतना अच्छा खाना खिलाया था और ऐसे प्यार से देखता था, जैसे कभी किसी ने उसे नहीं देखा था, सिवाय काले नारी चेहरे पर दो बड़ी-बड़ी आंखों ने।

सहृदयता और स्नेह भरी ये दो आंखें उसकी स्मृति में अतीत की, धुंधली याद के रूप में केले और नारियल के पेड़ों से घिरी झोंपड़ियों की यादों के साथ घुली-मिली, बनी हुई थीं। यह उसकी कल्पना थी या बचपन की छापें – उसके लिए कहना मुश्किल था। हां, ये आंखें कभी-कभी सपने में उसे दिखतीं, उसे सांत्वना देती थीं। और अब उसने प्रकट रूप में स्नेह भरी आंखें देखी थीं।

युद्धपोत पर बिताए ये दिन उसे उन मीठे सपनों जैसे ही लग रहे थे, जो नींद में आते हैं – अभी थोड़े दिन पहले की ही उसकी ज़िंदगी, दुख और डर से भरी ज़िंदगी से ये इतने भिन्न थे।

आखिर लूच्किन ने टोपी की बाबत समझाना छोड़कर संदूकची में से चीनी की डली निकाली और मक्सीम्का को दी। वह गद्गद हो उठा। उसने मल्लाह का खुरदरा, गट्टेदार हाथ पकड़ा और सहमा-सहमा से उसे सहलाने लगा। वह लूच्किन की आंखों में झांक रहा था, उसके चेहरे पर ऐसे पददलित जीव का भाव था, जिसे अंततः कुछ लाड़-प्यार मिला हो। उसकी आंखों से

भी और चेहरे से भी कृतज्ञता टपक रही थी ... लड़के ने चीनी की डली मुंह में डालने से पहले अपनी मातृ भाषा में जल्दी-जल्दी और बड़े जोश से कुछ शब्द कहे, उनके कंठ्य स्वरों में भी यही कृतज्ञता छलकती थी।

"देखो तो, कैसे लाड़ लेता है। कभी किसी ने तुझ दुखियारे को प्यार के दो शब्द नहीं कहे लगते!" मल्लाह अपनी फटी-फटी आवाज़ में जितनी कोमलता उंडेल सकता था, उतनी कोमलता से बोला। "खा ले न! बड़ी स्वाद है!"

निचले डेक के इस अंधेरे कोने में स्नेह के आदान-प्रदान के बाद मल्लाह और नीग्रो बालक की मैत्री पक्की हो गई। दोनों एक दूसरे से पूरी तरह खुश थे।

"हां, भैया, मक्सीम्का, तुझे हमारी बोली ज़रूर सिखानी चाहिए, नहीं तो कुछ समझ में ही नहीं आता. क्या गिटपिट करता है तू कलुए। अच्छा, चलो ऊपर चलें। अभी गोलंदाज़ी का अभ्यास होगा! देखना!"

वे ऊपर चले आए। शीघ्र ही ढोलची ने खतरे का ढोल बजाया। मक्सीम्का मस्तूल से सटकर खड़ा हो गया, ताकि बेतहाशा दौड़ते जा रहे मल्लाहों के पांवों तले आकर गिर न जाए। पहले तो वह तोपों की ओर दौड़ते जा रहे मल्लाहों को देखकर डर ही गया, पर फिर वह शांत हो गया और प्रशंसा भरी नज़रों से यह देखने लगा कि कैसे मल्लाहों ने बड़ी-बड़ी तोपों को पीछे धकेला, कैसे जल्दी से उनमें ब्रुश डालकर साफ़ किया, फिर से तोपें जहाज़ के पहलू के बाहर निकाल दीं। और उनके पास सावधान खड़े हो गये। लड़के को उम्मीद थी कि अभी गोलाबारी होगी और वह परेशान था कि किस पर गोले दागेंगे, क्योंकि चारों ओर कहीं कोई दूसरा जहाज़ न था। वह इस गोलाबारी से परिचित था और अपनी आंखों से यह देख चुका था कि कैसे 'बेट्सी' के दबूसे के पीछे धम से कुछ आ गिरा था। 'बेट्सी' जहाज़ तब हवा का रुख लेकर किसी तीन मस्तूलों वाले पोत से बचकर भाग रहा था, जो हब्शियों से लदे 'बेट्सी' का पीछा कर रहा था। लड़के ने देखा था कि कैसे जहाज़ पर सब डर गए थे और कैसे जहाज़ का कप्तान गालियां देता रहा था, जब तक कि तीन मस्तूलों वाला पोत काफ़ी पीछे न छूटने लगा। उसे यह पता

नहीं था कि यह उन ब्रिटिश क्रूज़रों में से एक था, जिन्हें हब्शियों का व्यापार करनेवालों को पकड़ने के लिए नियुक्त किया गया था; और वह भी खुश हो रहा था कि उनका जहाज़ बच निकला और इस तरह उसका जल्लाद कप्तान पकड़ा नहीं गया और उसे लोगों का व्यापार करने के लिए मस्तूल पर लटका नहीं दिया गया। *

लेकिन कोई गोला नहीं दागा जा रहा था। मक्सीम्का बड़े उत्साह से ढोल बजते सुन रहा था और लूच्किन पर नज़रें टिकाए हुए था, जो डेक के अग्रभाग की तोप के पास खड़ा था और निशाना साधने के लिए बार-बार झुक रहा था।

अभ्यास का दृश्य मक्सीम्का को बहुत अच्छा लगा और उससे भी ज़्यादा अच्छी रही अभ्यास के तुरंत बाद मिली चाय। पहले तो मक्सीम्का यह देखकर हैरान होता रहा कि कैसे सब मल्लाह मगों में से गरम पानी की चुस्कियां भर रहे हैं, चीनी की डली कुतर रहे हैं और पसीने से तर-ब-तर होते जा रहे हैं। पर जब लूच्किन ने उसे भी मग और चीनी की डली दी, तो मक्सीम्का को भी मज़ा आया और वह दो मग पी गया।

उसी दिन शाम को जब गर्मी कुछ कम होने लगी और जब लूच्किन के शब्दों में "दिमाग़ में बात बिठाना" आसान होता है, तभी उसने रूसी का पहला पाठ शुरू किया। वह लड़के को यह समझाना चाहता था कि उसका नाम मक्सीम्का है और उसके शिक्षक का नाम लूच्किन। लेकिन उसे अपने प्रयासों में कतई सफलता नहीं मिल रही थी और दूसरे मल्लाह उसका खूब मज़ाक़ उड़ा रहे थे।

---

* पुराने ज़माने में जब हब्शियों का व्यापार ख़ूब ज़ोरों पर था, तो यूरोप के प्रायः सभी देशों के बीच इस अन्याय का विरोध करने के हेतु अंतर्राष्ट्रीय संधि हुई थी। इसके अंतर्गत फ़्रांस और इंगलैंड अफ़्रीका और अमरीका के तटों की ओर अपने युद्धपोत भेजते थे। पकड़े गए लोगों के साथ सख़्ती बरती जाती थी। कप्तान और उसके सहायक को फांसी दे दी जाती थी और मल्लाहों को कठोर श्रम-कारावास की सज़ा मिलती थी। नीग्रो आज़ाद घोषित कर दिए जाते थे और पकड़े गए जहाज उन्हें पकड़नेवालों का पुरस्कार होते थे। – ले०

लूच्किन का मत था कि नाम का ज्ञान सारी शिक्षा की नींव है। यद्यपि वह कभी शिक्षक नहीं रहा था, परंतु अपने ध्येय की प्राप्ति में वह जिस अध्यवसाय से लगा हुआ था, जितने धीरज और नम्रता से वह सिखा रहा था, उस पर पेशेवर शिक्षकों को भी ईर्ष्या हो सकती थी, और फिर उन्हें तो शायद ही कभी ऐसी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा हो, जैसी मल्लाह के सामने थीं।

वह अपने ध्येय की प्राप्ति के लिए नए-नए चतुराई भरे रास्ते सोचता और तुरंत ही उन पर अमल क़रने लगता।

वह नन्हे नीग्रो की छाती पर उंगली रखकर कहता: "मक्सीम्का" और फिर अपनी ओर इशारा करके कहता "लूच्किन"। कई बार ऐसा करने पर भी उसे संतोषजनक परिणाम नहीं मिला, तब वह कुछ क़दम दूर हटकर चिल्लाने लगा: "मक्सीम्का!" लड़का खीसें निपोड़ता, पर इस तरह भी उसके पल्ले कुछ नहीं पड़ा। तब लूच्किन ने नया तरीक़ा सोचा। उसने एक मल्लाह से कहा कि वह "मक्सीम्का" पुकारे और जब उसने ऐसा किया, तो लूच्किन सफलता के विश्वास के साथ खुश होते हुए लड़के की ओर इशारा किया और वह पूरी तरह समझ जाए इसलिए उसका कालर भी हौले से झकझोड़ा। पर, अफ़सोस! मक्सीम्का खिलखिलाकर हंस रहा था। प्रत्यक्षत: कालर झकझोड़ने का मतलब उसने यह समझा कि उसे नाचने को कहा गया है, क्योंकि वह तुरंत ही उछला और सब मल्लाहों तथा स्वयं लूच्किन को खुश करता हुआ नाचने लगा।

आखिर जब नाच खत्म हुआ, तो लड़का यह अच्छी तरह समझ गया कि सब उसके नाच से बहुत खुश हैं, क्योंकि कई मल्लाहों ने उसका कंधा, पीठ, सिर थपथपाया और हंसते हुए बोले:

"गूड, मक्सीम्का! शाबाश, मक्सीम्का!"

यह कहना कठिन है कि मक्सीम्का को उसके नाम से परिचित कराने के लूच्किन के नए प्रयास कितने सफल रहते, जो वह फिर से शुरू करना चाहता था, पर तभी डेक पर वारंट अफ़सर आया, जो अंग्रेज़ी बोलता था और मामला आसान हो गया। उसने लड़के को समझाया कि उसका नाम "बॉय" नहीं, मक्सीम्का है और यह भी बता दिया कि उसके मित्र का नाम लूच्किन है।

"अब इसे पता चल गया है कि तूने इसका क्या नाम रखा है!" वारंट अफ़सर ने लूच्किन से कहा।

"बहुत-बहुत शुक्रिया हज़ूर!" खुश होकर लूच्किन ने कहा और बोला: "मैं तो बड़ी देर से मगज़पच्ची कर रहा था। छोकरा तो अक्लमंद है, पर यह नहीं समझ पा रहा था कि इसका नाम क्या है..."

"अब जान गया... पूछ देखो!"

"मक्सीम्का!"

नन्हे नीग्रो ने अपनी ओर इशारा किया।

"बहुत खूब, हज़ूर... लूच्किन!" फिर से मल्लाह लड़के की ओर उन्मुख हुआ।

लड़के ने मल्लाह की ओर इशारा किया।

और वे दोनों खिलखिलाकर हंस पड़े। बाक़ी मल्लाह भी हंस रहे थे और कह रहे थे:

"अरे, कलुआ तो पंडित बन रहा है..."

आगे के पाठ में कोई कठिनाई नहीं आई।

लूच्किन नई-नई चीज़ें दिखाता और उनके नाम बताता जाता। अगर कोई शब्द वह ज़रा भी तोड़-मरोड़ सकता तो ज़रूर ऐसा करता, कमीज़ की जगह "कमीजा", मस्तूल की जगह "मस्तूला"। उसे विश्वास था कि इस तरह वे विदेशी शब्दों से अधिक मिलते हैं और मक्सीम्का उन्हें आसानी से याद कर पाएगा।

जब शाम के खाने की सीटी बजी, तो मक्सीम्का लूच्किन के पीछे कुछ रूसी शब्द दोहरा सकता था।

"भई वाह, लूच्किन। फटाफट सिखा दिया कलुए को। ऐसे तो बस गूड केप तक पहुंचते-पहुंचते वह हमारी बोली ही बोलने लगेगा!" मल्लाह कह रहे थे।

"और नहीं तो क्या! गूड केप तक तो बीस दिन से कम का रास्ता नहीं है... और मक्सीम्का समझदार है!"

"मक्सीम्का" सुनकर लड़के ने लूच्किन की ओर आंखें उठाईं।

"देखो तो, कैसे अपना नाम जानता है!.. आ जा, भैया, बैठ जा, खाना खाएंगे।"

प्रार्थना के बाद खाटें मिलीं। लूच्किन ने मक्सीम्का को अपने पास डेक पर सुलाया। मक्सीम्का बहुत सुखी था और कृतज्ञता से ओतप्रोत। वह आराम से मल्लाहों के गद्दे पर सिर तले तकिया रखे और कम्बल ओढ़े जिस्म तोड़ रहा था। लूच्किन ने स्टोरकीपर से उसके लिए खाट और बिस्तर ले लिया था।

"सो जा, सो जा मक्सीम्का! सुबह जल्दी उठना होगा।"

मक्सीम्का की तो उसके कहे बिना ही आंखें मुंदी जा रही थीं। पहला पाठ उसने काफ़ी अच्छी तरह सीख लिया था। सोने से पहले बोला: "मक्सीम्का" और "लूचिक", अपने उस्ताद का नाम उसने यों ही समझा था।

मल्लाह ने नन्हे नीग्रो पर सलीब का निशान बनाया और जल्दी ही खर्राटे भरने लगा।

आधी रात से उसकी ड्यूटी थी। अगले मस्तूल पर एक और मल्लाह लेओन्त्येव के साथ वह ड्यूटी दे रहा था।

इधर-उधर देखकर कि सब कुछ ठीक-ठाक है कि नहीं, वे दोनों बैठ गए और बतियाने लगे, ताकि ऊंघे न। क्रोन्श्तात की बातें कीं, पुराने कमांडरों को याद किया और फिर चुप हो गए।

सहसा लूच्किन ने पूछा:

"लेओन्त्येव, तू कभी पीता-वीता नहीं?"

कभी नशा न करनेवाला संयमी लेओन्त्येव अच्छे मल्लाह के नाते लूच्किन का आदर करता था, पर साथ ही उसके पियक्कड़पन के कारण उसे घिन से देखता था। उसने दृढ़तापूर्वक कहा:

"कभी नहीं!"

"कभी हाथ तक नहीं लगाया!"

"कभी त्योहार-व्योहार पर एकाध गिलास पी ली, तो पी ली।"

"तभी तो तू जहाज़ पर अपना हिस्सा नहीं लेता, उसके बदले पैसे लेता है?"

"हां भैया, पैसे तो आख़िर काम आएंगे... रूस लौटेंगे, वहां रिटायर हो गए, तो हाथ में कुछ पैसे होने से अच्छा ही रहेगा..."

"सो तो है ..."

"पर तू लूच्किन, क्यों यह सब पूछने लगा?"

"इसीलिए, लेओन्त्येव, कि तू खुशक़िस्मत है ..."

लूच्किन ने थोड़ी देर चुप रहकर पूछा:

"सुना है इस नशे से छूटने का कोई मंतर-वंतर है?"

"हां, कुछ लोग पढ़ते हैं ... 'कोब्चिक' पर छोटे अफ़सर ने एक मल्लाह पर पढ़ा था ... जानता था वह ... हमारे यहां भी एक आदमी है ..."

"कौन?"

"ज़खारिच बढ़ई ... पर वह किसी को बताता नहीं। हर किसी पर पढ़ता भी नहीं। पर तू क्या पीना छोड़ेगा, लूच्किन?" लेओन्त्येव ने व्यंग्य के स्वर में पूछा।

"छोड़ना तो क्या, बस यह है कि अंधाधुंध न पिऊं ..."

"सोच-समझकर पीने की कोशिश कर ..."

"कोशिश तो की थी, पर बात बनती नहीं। बस एक बार पीने लगूं, तो फिर छूटती नहीं। ऐसा ही है मेरा ढंग!"

"ढंग-वंग कुछ नहीं, अक्ल की कमी है तुझे!" लेओन्त्येव ने उसे समझाते हुए कहा। "हर आदमी को अपनी होश होनी चाहिए ... तू ज़खारिच से बात कर देख। हो सकता है, तुझे ना न करे ... पर तेरे पर मंतर-वंतर का असर शायद ही पड़े!" लेओन्त्येव ने उपहास के साथ कहा।

"हां, मैं भी यही सोचता हूं। नहीं असर पड़ेगा!" लूच्किन बोला और खुद ही हौले से हंस दिया, मानो इस बात पर खुश ही हो कि उस पर किसी मंतर का असर नहीं पड़ेगा।

(८)

तीन हफ़्ते बीत गए। क्लिपर पोत 'लड़ाकू' केपटाउन से दूर नहीं था, लेकिन बिल्कुल सामने से और कभी-कभी तो तूफ़ान जैसी तेज़ बहती हवा की वजह से वह तट के पास नहीं जा पा रहा था। हवा और लहरें इतनी ज़ोरदार

थीं कि भाप का इंजन चलाकर भी नहीं पहुंचा जा सकता था। कोयला ही बेकार फूंका जाता।

मौसम बदलने की प्रतीक्षा में पोत पाल समेटे किनारे से थोड़ी ही दूर खड़ा था और ज़ोर से धचकोले खा रहा था।

इस तरह छह-सात दिन बीते।

आख़िर हवा रुक गई। जहाज़ पर भाप का इंजन चलाया गया और शीघ्र ही सफ़ेद चिमनी से धुआं छोड़ता पोत केपटाउन को चल दिया।

कहना न होगा कि मल्लाह इस पर कितने ख़ुश थे।

पर जहाज़ पर एक आदमी था, जो न केवल ख़ुश नहीं था, बल्कि ज्यों-ज्यों बंदरगाह पास आती जा रही थी, त्यों-त्यों वह अधिक उदास नज़र आ रहा था।

यह लूच्किन था, जो मक्सीम्का से बिछुड़नेवाला था।

बीते मास में मल्लाहों के अनुमान के विपरीत लूच्किन ने मक्सीम्का की देखभाल करनी नहीं छोड़ी, बल्कि उसे मक्सीम्का से मोह हो गया और नन्हा नीग्रो भी उससे हिल-मिल गया। वे दोनों एक दूसरे की बातें बड़ी अच्छी तरह समझ लेते थे, क्योंकि लूच्किन ने असाधारण अध्यापन योग्यता का परिचय दिया था और मक्सीम्का भी बड़ा होशियार निकला था। अब वह थोड़ी-बहुत रूसी बोल लेता था। वे एक दूसरे को जितना अधिक जानते जा रहे थे, उतना ही उनका लगाव बढ़ रहा था। मक्सीम्का के पास दो जोड़े कपड़े, जूते, टोपी और पेटी पर बंधा मल्लाहों का चाकू था। वह बड़ा समझदार और हंसमुख लड़का था। जहाज़ पर सब उसे प्यार करते थे, यहां तक कि येगोरिच मेट भी, जिसे जहाज़ पर कोई मुसाफ़िर कतई अच्छा नहीं लगता था, क्योंकि वे कुछ नहीं करते, वह भी मक्सीम्का के प्रति उदार था, क्योंकि मक्सीम्का काम के वक़्त सदा दूसरों के साथ रस्से खींचता था और सदा किसी न किसी तरह दूसरों की मदद करने की कोशिश करता था, मुफ़्त की रोटी नहीं खाता था। बंदर की तरह बरांडल पर चढ़ जाता था और तूफ़ान आने पर भी डरता नहीं था, संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि वह पक्का "मल्लाह छोकरा" था।

बड़े अच्छे स्वभाव का और स्नेही लड़का था वह। डेक पर नाच दिखाकर और सुरीली आवाज़ में अपने गाने गाकर वह मल्लाहों का मन बहलाता था। इसलिए सब उसे चाहते थे, लाड़-प्यार करते थे और वारंट अफ़सर का अरदली अर्तेमी अफ़सरों के कमरे में से उसके लिए बची-खुची पेस्ट्री ले आता था।

यह कहने की तो कोई आवश्यकता ही नहीं कि मक्सीम्का लूच्किन के प्रति कुत्ते की तरह वफ़ादार था, हमेशा उसके साथ रहता था। मस्तूल पर भी उसके पास चढ़ जाता था, जब वह वहां ड्यूटी पर होता, या जब वह गलही पर पहरा दे रहा होता, तो उसके पास घंटों बैठा रहता, बड़े जतन से रूसी शब्द सीखता।

... ऊंचे कगारों वाला तट अच्छी तरह दिखाई दे रहा था। 'लड़ाकू' पोत पूरी गति से बढ़ रहा था। दोपहर तक जहाज़ केपटाउन में लंगर डालनेवाला था।

इस सुहानी सुबह को लूच्किन का मन बुझा-बुझा था और वह ज़ोर लगा-लगाकर तोप साफ़ कर रहा था। मक्सीम्का उसके पास ही खड़ा हाथ बंटा रहा था।

"हां, भैया मक्सीम्का, थोड़ी देर में हम अलग-अलग जाएगा!" आख़िर लूच्किन बोला।

"अलग-अलग क्यों?" मक्सीम्का हैरान हुआ।

"तुझे गूड केप पर छोड़ जाएंगे ... और क्या करेंगे तेरा?"

लड़के ने अपने भविष्य के बारे में कुछ नहीं सोचा था और वह ठीक से यह समझ भी नहीं पा रहा था कि लूच्किन उसे क्या कह रहा है, पर मल्लाह का उदास चेहरा देखकर यह समझ गया कि वह कोई ख़ुशी की बात नहीं कर रहा। बालक के चेहरे पर उसके मनोभाव तुरंत ही झलक उठते थे। पल भर में उसका चेहरा उतर गया, बोला:

"मैं नहीं समझा, लूचिक।"

"जाएगा मक्सीम्का, जहाज़ से नीचे ... तट पर उतरेगा, मैं आगे चला जाऊंगा, तू यहां रहेगा।"

लूच्किन उसे इशारों से समझाने लगा कि बात क्या है।

प्रत्यक्षतः नीग्रो बालक सब समझ गया। उसने लूच्किन का हाथ पकड़ लिया और मिन्नत करते हुए बोला :

"मैं तट नहीं ... मैं यहां, मक्सीम्का, लूचिक, लूचिक, मक्सीम्का, ... मैं लूसी मल्ला ... हां, हां, हां ..."

सहसा मल्लाह के दिमाग़ में एक विचार कौंधा। उसने पूछा :

"मक्सीम्का रूसी मल्लाह बनेगा ?"

"हां, हां," मक्सीम्का दोहरा रहा था और पूरे ज़ोर से सिर हिला रहा था।

"अरे हां, कितना अच्छा रहे! पहले क्यों नहीं आई मेरे दिमाग़ में ... साथियों से बात करनी चाहिए और येगोरिच से ... वह बड़े अफ़सर से कह देगा।"

कुछ मिनट बाद ही डेक के अग्रभाग पर लूच्किन वहां जमा मल्लाहों से बातें कर रहा था :

"भाइयो! मक्सीम्का हमारे साथ रहना चाहता है। हम इजाज़त मांग लेंगे ... हमारे साथ हमारे जहाज पर रहे। तुम्हारा क्या ख्याल है, भाइयो ?"

सब मल्लाहों ने बड़े उत्साह से इस प्रस्ताव का स्वागत किया।

तब लूच्किन मेट के पास गया, उसे सारे मल्लाह दल की ओर से बड़े अफ़सर से अनुरोध करने को कहा और अपनी ओर से जोड़ा :

"येगोरिच, मेरी बिनती है, ना मत करना ... बड़े सा'ब से कह दो कि मक्सीम्का खुद भी रहना चाहता है ... कहां बेचारे अनाथ को अकेला छोड़ जाएंगे। बिल्कुल मारा जाएगा बेचारा ... तरस आता है लड़के पर ... इतना अच्छा छोकरा है!"

"ठीक है, मैं कह दूंगा ... मक्सीम्का अच्छा लड़का है। पर पता नहीं, कप्तान क्या कहे ... हब्शी को रूसी जहाज़ पर रखने को तैयार हो कि नहीं ... कहीं इसमें अड़चन न हो ..."

"कोई अड़चन नहीं होगी, येगोरिच। हम मक्सीम्का को हब्शी नहीं रहने देंगे।"

"सो कैसे ?"

"हमारे रूसी धर्म में उसका बपतिस्मा कर देंगे और वह रूसी हब्शी हो जाएगा।"

येगोरिच को यह विचार पसंद आया और उसने तुरंत ही बड़े अफ़सर को रिपोर्ट करने का वायदा किया।

बड़े अफ़सर ने मेट की बात सुनी और कहा :

"लूच्किन कह रहा है?"

"सारा मल्लाह दल कह रहा है, हजूर... कहां उसे छोड़ेंगे? तरस आता है, हजूर... वह हमारे जहाज़ पर छोटा मल्लाह होगा। लड़का बड़ा सुधरा हुआ है, हजूर। और अगर उसका बपतिस्मा कर दें, तो बस आत्मा का भी उद्धार हो जाए।"

बड़े अफ़सर ने कप्तान को रिपोर्ट देने का वायदा किया।

झंडा फहराने के समय कप्तान ऊपर आया। बड़े अफ़सर ने जब मल्लाह दल का अनुरोध बताया, तो पहले तो कप्तान न करने लगा था। पर फिर शायद उसे अपने बच्चे याद हो आए, उसने तत्क्षण अपना निश्चय बदल लिया और बोला :

"ठीक है, रहे। उसे छोटा मल्लाह बना देंगे। और जब हमारे साथ क्रोन्श्तात लौटेगा तो उसे कहीं दाखिल करा देंगे... वाकई, क्यों उसे यों छोड़ा जाए और वह खुद भी नहीं चाहता! हां उसे लूच्किन की देखभाल में ही रहने दीजिए... है तो यह लूच्किन पक्का पियक्कड़, पर देखिए... लड़के से इतना लगाव... मुझे डाक्टर ने बताया था, कैसे उसने नीग्रो के लिए कपड़े सिए थे..."

डेक पर जब मक्सीम्का को जहाज़ पर रखे रहने की खबर पहुंची, तो सभी मल्लाह बेहद खुश हो उठे। बेशक लूच्किन और मक्सीम्का सबसे ज़्यादा खुश थे।

दोपहर के एक बजे पोत ने केपटाउन बंदरगाह में लंगर डाला। अगले दिन जो मल्लाह पहली पाली में ड्यूटी दे चुके थे, उन्हें तट पर जाने की इजाज़त मिली। लूच्किन और मक्सीम्का भी जाने को तैयार हुए।

"देख, लूच्किन, कहीं मक्सीम्का को बेचकर मत पी लेना," येगोरिच ने हंसते हुए कहा।

प्रत्यक्षतः यह बात लूच्किन को चुभी, उसने जवाब दिया : "हो सकता है मक्सीम्का की वजह से मैं बिना पिए लौट आऊं!"

लूच्किन तट से नशे में धुत्त लौटा, पर सब यह देखकर हैरान थे कि

उसके कपड़े सही सलामत थे। बाद में पता चला कि ऐसा मक्सीम्का की बदौलत ही हुआ। उसने जब यह देखा कि उसका मित्र हद से ज़्यादा पी रहा है, तो वह भागा-भागा पास के दूसरे अड्डे पर रूसी मल्लाहों को बुलाने गया और वे लूच्किन को घाट पर उठा लाए और उसे नाव में लिटा दिया, जहां मक्सीम्का उसके पास से पल भर को भी नहीं हटा।

लूच्किन के मुंह से बोल मुश्किल से निकल रहे थे, पर वह बार-बार कह रहा था :

"मक्सीम्का कहां है? इधर दो, मेरे मक्सीम्का को... भाइयो, मैंने मक्सीम्का को नहीं बेचा ... वह मेरा सबसे अच्छा दोस्त है ... कहां है मक्सीम्का ?"

और जब मक्सीम्का उसके पास आया, तो वह तुरंत शांत हो गया और सो गया।

हफ़्ते भर बाद 'लड़ाकू' पोत केप ऑफ़ गुड होप से चल दिया। शीघ्र ही धूमधाम के साथ मक्सीम्का का बपतिस्मा किया गया।

तीन साल बाद 'लड़ाकू' पोत पर चौदह वर्ष की आयु में मक्सीम्का क्रोन्श्तात पहुंचा। जहाज़ पर वारंट अफ़सर उसे पढ़ाता रहा था और अब वह रूसी अच्छी तरह पढ़-लिख लेता था।

कप्तान ने उसे नर्सिंग स्कूल में दाखिल करवा दिया। लूच्किन भी रिटायर हो गया और क्रोन्श्तात में ही रहने लगा, ताकि अपने प्यारे बालक के पास हो, जिसे उसने अपने हृदय का सारा स्नेह दिया था और जिसकी ख़ातिर अब वह अपने कपड़े बेचकर नहीं, बल्कि सोच समझकर पीता था।